

विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-०७/१०/२०२०(एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:सप्तमः पाठनाम (सौहार्द प्रकृतेः शोभा)

नाट्यांशः-

सिंहः- तुष्णीं भव भोः। युवामपि मत्सदृशौ भक्षकौ न तु रक्षकौ । एते वन्यजीवाः भक्षकं रक्षकपदयोग्यं न मन्यन्ते अत एव विचारविमर्शः प्रचलति ।

बकः- सर्वथा सम्यगुक्तम् सिंहमहोदयेन । वस्तुतः एव सिंहेन बहुकालपर्यन्तं शासनं कृतम् परमधुना तु कोऽपि पक्षी एव राजेति निश्चेतव्यम् अत्र तु संशीतिलेशस्यापि अवकाशः एव नास्ति।

शब्दार्थाः-

तुष्णीं भव - चुप हो जाओ , विचारविमर्शः - सोच विचार

बहुकालपर्यन्तम् - बहुत समय तक , अवकाशः - स्थान

निश्चेतव्यम् - निश्चित करना चाहिए , संशीतिलेशस्य - थोड़े से भी संदेह का

अर्थ -

सिंह - अरे चुप हो जाओ । तुमदोनों भी मेरे जैसे ही भक्षक हो रक्षक तो नहीं । ये वन के जीव भक्षक को रक्षक के पद के योग्य नहीं मानते हैं , इसलिए बातचीत चल रही है ।

बगुला- शेर महोदय ने पूरी तरह से ठीक कहा है। वास्तव में शेर ने ही बहुत समय तक राज्य किया है, परंतु अब तो कोई पक्षी ही राजा बने , ऐसा निश्चय करना चाहिए। यहां तो संशय का थोड़ा सा भी स्थान नहीं है।